TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. P_MSS_4479

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

अर्पण॥ स्मृत्वा पार्श्वसिद्धसांकुं नत्वा पंकजबोधकं पर्युषणाष्टाह्निकाया: व्याख्यानं लिख्यते मया १ अर्थ: श्रीपार्श्वना
थजीनें समरीनें किसाइक छै सूर्यनी परें नव्यजीवरूप कमलनें ज्ञानप्रकाशना दाता छै पर्युषणापर्वनी अगाइनी
महिमाऊं लिखुं छुं एपजुंषणापर्व किस्यो छै जे एपर्व आराधवाथी हत्या छै सर्वे कठिन कर्मनामर्म इत्यन वैपरन्नवेरि
शोषहितकर्मी छै नवाविनयविवेकादिगुणवान उत्तम श्रीपजुसणापर्व आराधकं धर्मविज्ञवकरे जिमसर्व सुरअसुरना
च्यारप्रकारना ६४ इंद्र मिलीनें श्रीनंदीश्वरनामें द्वीपें महारमणीक पवित्र एहवो आठमो द्वीप तिहां धर्मनी महिमाकरि
वानें जाय्ये ते कारणें एअठाईपर्व मोटो छै तिहां पहिलो जंबूद्वीप १ बीजो धातकीखंड २ त्रीजो पुष्करवर ३ चौथो [illegible]
वर ४ पांचमो खीरवर ५ छठो घृतवर ६ सातमो इक्षुवर ७ आठमो नंदीसर ८ नवमो अरुणवर ९ इम असंख्याता द्वीपस
मुद्र छै तिहां नंदीश्वरद्वीपनें मध्यभागे च्यारूं दिसें च्यार अंजनगिरिनामें काले वर्णरा पर्वत छै त्यां पर्वतां मांहे जूजूई-
च्यारे दिसें च्यार वावडी छै ते वावड्यांनें विचाले जुदा २ दधिमुखनामा पर्वत छै त्यां पर्वतां में जूजूई च्यारे दिसें च्यार वावडी
छै ~~वावड्यांनें विचाले जुदा २ दधिमुखनामा पर्वत छै~~ फेर वावड्यांमें दोलुं पसवाडे दो रतिकरपर्वत छै इम एकेक वावडी
दीठ तीन ३ पर्वत छै इम च्यारे दिसामा मिल्या बारे पर्वत होय फेर एक अंजनगिरि मिल्यां तेरह थया इम च्यारे दिसानां तेरनें
चोगुणा कीजै तो तेरे च्यार्वा ५२ पर्वत हुवे त्यां पर्वतांना नामकहे छै च्यार अंजनगिरि छै सोले दधिमुख छै बतीस रतिकर
पर्वत एवं ५२ ते ऊपरे एकेक जिनमंदिर छै इम ५२ देहरा छै वली ते देहरामें एकेकमांहे एकसो चोवीस जिनबिंब छै ते रि 1
षभानन १ चंद्रानन २ वारिषेण ३ वर्द्धमान ४ इणे नामे प्रतिमा छै ते सर्व देहराना ६ हजार च्यारसें अठावीस जिनबिं १
बजाणवा ते देहरा शाश्वता छै महामनोहर छै च्यार बारणा छै वंदनमालाकरी शोभे छै तिहां ६४ इंद्र अधिक भावे क
री पर्युषणापर्व आवे अठाईमहोत्सव करे जल १ चंदन २ दीप ३ धूप ४ फूल ५ अक्षत ६ फल ७ नैवेद्य ८ सुं जिनबिंबनें

जिनगुणगावे भावनाभावे न्हलकरे आठदिन पजूसणामे मोटो उछव करे फेर तिकाणो आपके जाय तिम श्रावक पिण श्री
तीर्थंकर कह्यो मोटो पजुसणापर्व आयां थकां धर्मकार्य यतनसूं करे पर्व तो घणाई छै श्रीजिनमतमे कह्या छै पिण पजु
षणा सरीषो कोइ नथी कर्मका मर्मनो भेदणहार इस्यो पर्व आयां थकां श्रावकांने धर्मकार्य करणो ते कहे छै प्राणातिपात मृ
षावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह ए पांच आश्रव क्रोध मान माया लोभ ए ग्यार करे नही श्रावक ना बारव्रत सामा
यक करे जिनपूजा करे तपस्या करे प्रभावना करे ते हां बेंद्रीयादिक त्रसजीवनी विराधना श्रावक वर्जे सर्व दानमां
हे अभयदान श्रेष्ठ छे कह्यो छे सुयगडांग दूसरा अंगमांहे दानमे श्रेष्ठ अभयदान जीवने देणो ते प्रधान छै दीये मरताथु
रूपने धननी कोडि एकने जीव देवै तो धननी कोड न लेवे आप जीवत्यो ले सर्वजीव णो वांछे छे उरकहे जो देवे सोनाको मेरु
पर्वत सारी पृथ्वी दानमे देवे अथवा एक जीवने जीवदान देवै तो पृथ्वीमे दोनु बराबर नही जीवदान देणवालो बधतो
कह्यो केवलीये फेर कहे छै पंथ समान दुख को नही क्षुधा समान वेदना नही मरण समान भय नही दालिद्र समान तिर
स्कार नही इम सर्व दानमे अभयदान श्रेष्ठ तीन लोकमे रहणो जे जीव प्राणी त्रस बेंद्रीयादिक थावर पृथ्वी प्रमुख तेहने भा
रे छेदे नै दे नही मन वचन कायाई करीनें साराही जीव दुख सुं डरे छै साराही जीव सुख चाहे छे सारा नै जीवा वाल्हो छै प्रा
ण मरवा सुं बीहे छे श्रेष्ठ अन्नदान गृहणादान षण धानको दान सोनानो दान राज्यदान जमीनो दान इत्यादिक द
न दीधां जेहवो हुवै तेहवो फल अभयदान दीधां हुवै इत्तरै दया पाले इम जांणीने कोइ जीवने हणिवो नही इहां द
ष्टांत कहे छै कुमक नामे राजा थयो वसंतपुर नगरने विषे तेहने पांचसे राणी छे तेमांहे एक राणी अणमानीती छे
राजा बोले नही पीहरसूं गुदरांन करे छे एक दिन तिण नगरमे कोटवाले एक चोर धन साथे पकड्यो राजाई शूली देवानो 2
हुकम दीधो तिवारे वडी राणीने चोरने राजापासे मांगीने एक दिन जीवतो राख्यो पोताने घरे आणी तेल मगाई उबटणो

स्नानकरावे विलेपनकरीजीमाडे भलावस्त्रपहिरावे सारागहणापहिरावे भोगभोगावावे तिमजईज्योसे बीजीपिण
राणीयें एकेके दिनै तेचोरनै मारवाथी राख्यो इमच्यारसै निनाणवे दिन तांईजीवाड्यो हिवे छेहलीडलागणिरा थीई
राजानै कह्यो मोनैपिण एचोर आपो हेस्वामी पांतिमेंथी मनाटाल्यो सत छुरूषमवनिखरोखरजाणै सदाईएचोरअ
भयदानें करीमोनेद्यो हेस्वामी प्रसन्न होयनें उम्हेडेंर करोइ मोनें दीधो नहीइतरा दिनांमे परणपापछी तेराणीनीस्याक
रीराजातूठो तत्क्षण इमकहे दीधो एचोर तुमनें जीवे जठातांई अभयदान दीधो तीवारे राणी हर्षपामी घरसासरूना
नकराई भोजनदेई थाहाभोजाकपडादेई सर्वप्रकारे अभयदान दीधो ओचोर मरणसंछुटो जांणीहर्ष्यो एसतदैजीव
वारेवास्ते राजपुकराई वणोलोकहेछे इणमें आश्चर्यनहीं हिवे सारीराणी मोहोमांहिलेहासकरे वधीकहैमैजीवाड्योछेडो
ड्रांकहै मैजीवाड्योछै इमसुणीराजाराणीपाकोझगडोमेटवानेचोरनैबुलायश्छैछे अहोनडक ताहरी
ऊणजातछे कोणदेसछै कोंइथांरो नामछे आप्यामहरो मांडो रूपछे पिण विरुद्धचोरीनोकर्मकांकरे तिवारेचोरकहे
सुणो स्वामी हुं विंध्यपुरनगरनो विंध्यनामेराजातेहनैघणोप्रीतिवंतसेठ तेहनोपुत्रहुं म्हारापितानोनामवसुद
त्तछे म्हारोनामवसंतछे लडाव्योपाल्यो घणोभणायो बांणीयारीकन्यापरणाई दुष्टकर्मनावससं हुंजुआरीसा
थेरमतो व्यसनीथयो मातापितासीषदेवैतो पिणनमान्यो तिवारेपिताये राजानै वीनतीकरीनेघरथीबारेकाढ्यो
भमतो२ जीवमांगीषाता कष्टथीजीव्यो तोपिण जूआरमेंहुं रस्योनजाय द्रव्यविनाजूएँ ऊणरमावे नहिउपायको
ईइमको नदचोरीकरणलागो कोटवालेंपकडी म्हारे आगलिआण्यो उम्हे शूलीनोक्रमदीधो तदजंकांपोभय 2
सें ४एएए राणीयें मुझनैराख्यो पोतानैंघरे भोजनकरायो बीकणाभोजन घणाभोगभोगाव्या शब्दरूपरसगंधफ
रसादिक विषयसुषदीधा तोपिणहुंसुषनपाम्युं शूल्यचितरह्यो वधेरानीदृष्टसुं मृगल्यानीपरे अंतमे आपरोमरण

सांभरेयो तिवारे उमहारीछेहलीसखी शीलमती आपलेघरेथोडोसोभोजनकराइनेछोड्यो तदहूं जावजीव तांईमरणनाभयथीछूटो
प्रसन्नहुयोराजा शीलमतीनेहर्षसुं पटराणीपददीधो अभयदानथीराणीवांछितपदपामी सोशीलमतीशुद्धधर्मकर्मविशेसा
वधानक्रयजीवरक्षाकाजनावसंपामीदेवगति योहीराणीशीलवतीकोधर्मपुत्रवसंतहुओ श्रावकधर्मगुरुकनैलेई देवलोक
पुहतो इमअभयदाननोफलसुणीउमे पिणभोनव्यजीवो आदरयुं अभयदानयो इतिअभयदानउपरशीलवतीराणीनीक
था॥१॥ अबैं शिवशासने महाभारते पहलेपायेशांतिपर्वनैविषैकह्योछे युधिष्ठिरपूछे रुषभकहैछे किमउपजे धर्म किमधर्म
वधे किमधर्मरहे निश्चल किमधर्मविणसे साभलेधर्मउपजे दयादानेधर्मवधे क्षमाइनिश्चलरहे धर्म क्रोधलोभथीविणसे जीवदया
पालेसाचबोले चोरीनकरे लोभनकरे परस्त्रीवर्जे एपांचपदार्थमांहे धर्मसगलाईकह्याछे सर्वदानपंफलनहीसर्वयज्ञकीयांफल
नहीसगलाईतीर्थंगयांफलनहीइतरोदयापाल्यांफलहोय जीवदयापालवीतेहिजधर्मछे प्राणिनोमारवोतेअधर्मछे इणवास्ते
धर्मार्थीलोक प्राणीनीदयाकरे मार्कंडपुराणमेंकह्योछे जीवांकीरक्षाकरवीतेनसीजीवसघलाजीववोवांछेछे तिणेसर्वदानमांहे
अभयदानश्रेष्ठछे योदेवे हजारगायदान थोडोसोदानदेवे कोइएकजीवनेबचावई तिकोअभयदानसर्वथी अधिकछे कपिलागा
यहजारजोब्राह्मणनेदेवे कोइएकजीवदानदेतोतेसुंतुल्यनहींहेयुधिष्ठिर दानदीधो तपकीधो तीर्थगयो शास्त्रसुण्योइतराथकीपा
पिणअभयदाननीसोलमीकलानेजोग्यनथी नहीहेराजा स्याउपरांतकोइधर्मपृथ्वीमें जीवनेभयवंतनेदरसानेअभयदानदीजे श्रेष्ट
एकजीवनेअभयदानदेणो जेदेवैछैतेहनेएदेहकुटतांकिणहीनोभयउपजे हेमगायपृथ्वीइत्यादिकनादातारघणाधरतीमेंजाणै
पिणदुर्लभछे एलोकमें जीवानें अभयदानदेणहार मोटादाननोफलकालांतरे क्षयहोय पिणअभयदाननोफलनिश्चेक्षयनही 3
होय इमभारतमेंकह्योछे सर्वजीवनीदयाअर्थे जोनहणे प्राणिनेतेपुरुषनिश्चेधर्मसहितदेवलोकेजाय सातुंपृथ्वीरत्नसुंभरीछेदेवे
मेरसुवर्णकीदेवेदान जेहनेजीवदयानहीतोसारानिरर्थकछे जोदेवेमेरुकंचनकासारीपृथ्वीदानदे एककोईजीवितदानदेतोतुल्यनहीं
हेयुधिष्ठिर इमभारतमेंकह्योछे

।आदरहोय चलोरूसहोय सौम्याकारहोय दातारहोय भोगवंतहोय यशवंतहोय अनयदाननोदेणहार मोटाआउषावंतनीरोगीहोय
जीवदयाउतकृष्टोधर्मछै जीवदयातपस्यामोटीछै जीवदयामोटोज्ञानछै जीवदयाउतकृष्टोत्रिकाळछै जीवदयावडोदानछै जीवदयाइं
द्रीदमबोछै जीवदयावडोयज्ञछै जीवदयामुक्तिदातारछै हिवे अनयस्तनार्थे रात्रिभोजननोअधिकार मार्कंडपुराणमेकह्युंछै पाणी
नपीवणो रात्रिनेहेजुधिष्टिर तपसीनेविशेषकरिवर्जणो विवेकीग्रहस्थनेरात्रिभोजनवर्ज्यो अस्तहोयसूर्यजिवारपछै पाणीरुधिरसरीखो
अन्नमांसजिस्योकह्यो मार्कंडरुषीयरे जेघरमेकोईमनुष्यमरे तिवारेसूतकहोय तोसूर्यअस्तहोयेंनोअन्नकिमकीजे लोहीहोयपां
णी अन्नमांससमहोय रातेभोजनकरेछै तो एककबजजीवमांसनकणनोदोसलागे रात्रिनेकीडीखायतोबुधिहणै जूंखायतोज
लोदररोगकरे माखीवमनकरावे कलातरोकोढरोगकरै जेरातनोआहारनकरै पंडिततेहनेएकमासमेपनरादिननाउपवासनोफ
लहोयछै इतिरात्रिभोजनाधिकार॥ चलेश्रावकेपर्युषिणामे धान्यनोपीसनपीसणचुलावणवस्त्रधोवणरंगावणप्रमुखसर्ववर्जे
तेलीघांणीलोहारभडभुंजानानाउपसर्वदयापलावे धनदेकरिआरंभटाले आपकीशक्तिबंदिवानछुडावे ग्रामनगरमेजीवदयाप
लावैहेजोमरावेकसाईकर्मवर्जे जीवदयाजिमतिमकरे १ दुसरो आश्रव मृषावादटालेकठुकवचनमात्र इणपर्वमेनबोले पाजिन
देवेकगेरवचननबोले वचनमीठाबोले २ तीजोआश्रवअदत्तादानछोमे परधननलेइणमात्रदिन ३ चोथोआश्रवमैथुनत्यागें इ
णांदिनामेस्वस्त्रीपरस्त्रीसर्वथावर्जै ४ पंचमआश्रवपरिग्रहत्याग धनधान्यादिकवस्तुपरिग्रहनोत्यागकरैनियमकरे ५ फेरइणपर्वमे
कषायनोत्यागकरै।तेकषायनाच्यारभेदछै क्रोध१मान२माया३लोभ४ किणीसाथेजगडोनकीजे पेहलीक्रोधहोयक्रोधतेहनोपिणमि
छामिदुकडंदेणो क्रोधमहादुष्टछै सोमप्रभाचार्यकहेछै क्रोधमित्रछे कामकाविकारकरवानेनयनोकपजावणहारछे फेरसाधको
इजोरूसछे पुन्यनेंबालवानेअग्निकोनाईछै जीवनेंमदवंतकरवानैविषवृक्षसमानछै अद्यवर्यनोभंजणहारछे क्रोधनेंकल्याणवं
बकबुत्तसजउसुंजपाडीनांषे १ फेरदुजोकषायनोत्यागकरे माननेछोमे मानकाउदयसेंनजाभानवंतप्रुनीनें केवलग्याननपामि 2
वानोअंतरायकरे राजऋषिबाहुबलकीनांइ बहिनकावचनसुंमानगेर्या केवलग्यानपायो मानकाअवगुणकह्याछै श्रीसोम
प्रभाचार्ये जेमानथीविस्तारपामैछे इमेतिरीजायइसीआपदारूपनदी जिणमानथीगुणरूपनजायोप्रगुणप्राणीनाप्रगटन
होय तिकोमानरूपपर्वततेनेंछोमेमोमांनवंतदयाधर्मनपामे इतराअवगुणमानमेंछै तेपर्युषणामेमानकरवोनही सर्वथाफेर
तीजोकषायकपट निश्चेछोमे कपटमेदूषणकह्याछै श्रीसोमप्रभाचार्ये कपटकल्याणउपजावानेतोनिष्फलछै साचरूपसूर्यनें
अस्तकरवानेसंध्यासमानछै ऊगतिरूपस्त्रीनीमाजाछे मोहरूपहथ्थीनीशालाछे शमतारूपकमलनेंबालवानेशीतदाहसरी
षोछे अपयशकीराजधानीछे कपटसेंम्ससनंकोसहाईछै तिसमायाइरीछोमो ३ वलेचोथोकषायेलोभवर्जणो धर्मकर्ममेंध
नषरचकरणो लोभकरीषोटोव्यापारलाषसाजीसाबुविषजातिनविणजणो लोभनेंअसुखपणोंकह्योछै श्रीसोमप्रभाचार्ये
लोभथकीदुष्टजाउमेफिरेछे लोभथीदेशांतरजायछै गाहेनेअटवीनेसमुद्रमेफिरेप्राणी लोभथीषेतीकरे सेवेकृपणस्वामी
नेहाथीनीघटासमूहनीवरेफिरेलोभथी परायोधनलेवानेपरनेहणे हितवांनपुरुषलोभनेछोमे ४ इणसुंच्यारेकषायछोम
वा फेरकहेछै क्रोधप्रीतनोनाशकरे मानविनयनोनाशकरे कपटमित्राइकोनासकरे लोभसर्ववस्तुकोनाशकरे १ तेणेइणपर्वमें
पांचआश्रवच्यारकषायनोत्यागकरेवो चलेश्रावके फेर इणपर्वमेंकर्त्तव्यकहैछै सामाईकरे जिनप्रतिमापूजे वलेपर्युसणामें
नलाश्रावकसामाईकिमकरे तिकोसामाइकनेंस्वरूपकहेछै समताराषेचोरासीलाषजीवायोनिसुं संजमपालेभलीभावनाभावे
आर्त्तरौद्रध्यानछोमे तिकोसामाइकव्रतकहीजे कह्योछै सिद्धांतमांहे जेसर्वप्राणीथीसमताराषे त्रससुंस्थावरसुं तिकोसामाइस
छे इसोकेवलज्ञानीयेकह्यो दिनदिनमेएकलाषसोनोदेवेएकजणो एकसामाईव्रतकरैछै तोदोन्युंबरोबरनहीसामाइकअधिक
३ बलीजेवदेपोसोकरे पोसानोफलयोछे पोसेसुनभावेकरेतो अशुभकर्मनेंखपावे संदेहनही छेदेनरकतिर्यंचगति पोसोअप्रमादी 4
पणेकरे १ दुष्टकरेधर्मनेंइसोपोसो पर्युषणामेकरवो पोसोनवणैतोकांईकरेसोकहैछै जिनपूजाकरे पर्युषणापर्वआयांथकांश्र

वंदे थ्थिवा ग्राति द्रव्य पूजा करे देव पूजा नो फल कहे. सो गुणो पूजा नो फल होय हजार गुणो फल विलेपन कियां लाख गुणो माला च
ढावां अनंत गुणो गुणग्राम कियां जिन दर्शन थी ज्ञान पायो अनार्य देश में आर्द्रकुमार तिको कहे छे इहां आर्य देश तो देव गुरु धर्म
जाणे पिण अनार्य देश भगवान नी मूरत देखी तिस्यो तेहनो दृष्टांत कोइक लघुकर्मी जीव सुलभबोधि सु अनार्य देश विषे पिण आर्द्रकु
मार नी परे गुण कासमे घणां आर्य देश नां रत्न नी दर्शनादिक होय लवण समुद्र में कौस्तुभ मणि अने चंद्रमा उपना पिण ते होनी शो
भा किहां जावे ते कहे छे गंगा नदी ये शोभित महादेव ने माथे चंद्रमा रहे ते चंद्रमा नी शोभा हुवे अने लक्ष्मी नो निवास छे जिहां एहवा कृष्ण
ना हृदय ने विषे कौस्तुभ नी शोभा छे । भावार्थ कथा ये करी कहे छे नामे करी मगध देश जे शत्रुना अंश करी रहित छे जिहां दुख लोक अ
न्याय नो नाम पिण नहीं तिहां राजगृही नगरी देवपुरी सरीषी जेहनी सुंदरता देखी लंका लाज करी समुद्र में पेसी छे रावण जिम कीया छे वै
री नी श्रेणि इसो श्रेणिक राजा छे तीको बहोत्र न्यार बुद्धि नो धणी अभयकुमार मंत्री छे हिवै इहां जो संबंध कहे छे समुद्र मांहे आर्द्रक देस
नामे देश छे तठे आर्द्रक नामा नगर तिहां आर्द्रक नामा राजा छे तिके राजा के आर्द्रका नामे स्त्रियां छे तिको कूख थी उत्पन्न न्यायवंत एक नामे
करी आर्द्रकुमार छे शोभावंत करते पृथ्वी ने सुखा जउवो । ते आर्द्रक राजा के श्रेणिक राजा साथे परंपरानी प्रीति छे तिका मन ने सुख
कारी छे उर दिने श्रेणिक राजा दे भेटणो आछो आर्द्रक राजा पासे आपका मंत्री ने ने प्रीत वधावा ने काजे मंत्री जाय ने ते भेटणो रा
जा आर्द्रक ने दीधो हित संश्रेणिक राजा रो सुजस रो कहतो हुवो तिवारे आर्द्रकुमार कहे कुण छे श्रेणिक राजा जे एहवी इसी प्रीत छे थांहरे सा
थे कदे दीठा दीठ नहीं कहे आर्द्रक राजा मगध देश नो राजा श्रेणिक मोटो भूपाल छे तेह सुं परंपरानी प्रीत छे तो कुल मांहे कुल वापदा
दादी हिवे आर्द्रकुमार तिण मंत्री ने प्रीत पूछे छे को इगुणवंत पुत्र छे थांका राजा के तो कहो तद मंत्री कहे पुत्र छे पांचसे पिण प्रधानां में
मुख्य महाबुद्धि नो धणी नामे करी अभयकुमार छे आर्द्रकुमार चिंतवे तिण अभयकुमार साथे म्हारे प्रीति करणी मंत्री ने कहे छे थे
मुझने बिना कह्यां जाज्यो मती सुणो तुमे म्हारो वचन पवित्र तिहां जइने म्हारे अभयकुमार साथे प्रीति करणी जइ परे निश्चे कीज्यो

मंत्री कहे हमही जकहस्युं इसो कहीने राजा ना दीधा मंदिर में रहे कितराइक दिन तिहां सुखे रहे एकदा आर्द्रक राजा मोती नो भेटणो दे
इ घणुं आपणो मंत्री साथे जे जी मंत्री ने सीख दीधी अभयकुमार सुं मित्राई करवाने आर्द्रकुमार मोती दिये अभयकुमार ने भेटणो
तेहज मंत्री ने हाथे तिको नर मंत्री ने साथे राजगृही पोहतो श्रेणिक ने अभयकुमार ने दीधो भेटणो अनुक्रमे कह्यो मंत्री ये अभय ने
तुम्ह सुं आर्द्रकुमार मित्राई करवा वांछे छे तिवारे अभयकुमार विचारे छे जे एह भवि नि वे जैन धर्म छो चतले इ विराध्यो जिण सुं इ
अनार्य देश में राजा पुत्र हिवे कोइ उपाय करीने आर्द्रक ने उत्कृष्टो अरिहंत नो भक्त करुं शरीर इम पवित्र पणे मित्राई रूप देखे करी तेह
ने न जीक नव्य पणो छे तां ने अरिहंत बिंब देखवा थी उपजसी जातिस्मरण ज्ञान तिणे करी प्रतिबोध पामसी इम विचारी रूपन देवनी प्र
तिमा भेटणा ने मिस अभयकुमार ने जे पेइ में रत्नमइ उपगरण सहित श्रेणिक राजा ते आर्द्रक ना पुरुष ने सीष दीधी तिका पेटी अभयकुमा
र तिण पुरुष ने इम कहे या पेटी भेटणा नी दीजो आर्द्रकुमार ने यो वचन कहजो तुम्हे एकांत लेयने एकंत या पेटी उघाडज्यो पोते जति
ण पेटी मां हिली वस्तु काढी देखज्यो उरको इने देखाज्यो मती एहवो कहीने ते पुरुष ने मोकल्यो ते जाई आर्द्रक राजा ने आर्द्रकुमार ने
भेटणो आपे अभयकुमार नो वचन आर्द्रकुमार ने कहे तिवारे एकंत जाइने ते पेटी उघाडे तेमांहे देखे जिन प्रतिमा विचार की भोजे ए ।
कोइक अंगनो गहणो कांइ ए आछो छे देखे विवेक सुं कदे इक में इम विचारतां उपनो जातिस्मरण ज्ञान पाछलो भव देखे आर्द्रक इ
ण भव थी तीजे भवे हुं कोटुंबिक गृहस्थी हुंतो वसंतपुर नगर में सामाइक नामे बंधुमती स्त्री हुंती एक दिन सुस्थिताचार्य पासे ध
र्म सुणी स्त्री सहित पंचमहाव्रत लेइ गीतार्थ हुओ गुरु समीपे रह्यो एक समे विहार करतां पोतानी स्त्री साधवी बंधुमती ने देखी ने रा
गवंत हुवो आपणा मन नो चपलपणो आपकी स्त्री आगे कह्यो ते स्त्री पोताना शील व्रत राखवा ने अणसण कीधो इण कर्मे प्राण
छोडी ने ते स्त्री देवलोके देवता हुइ तेहनो मरण देखी कंपनो मन में वैराग्य अणसण लेइ पाप आलोइ समाधि सुं मरीने देवता 5
हुओ तिवारे तीजे भवे तिहां थकी चवी हुं उपनो अनार्य देश में तां पोते छे व्रत जिण थी हिवे प्रतिबोधवा ने भाइ अभयकुमार मो ने सु

इमलियो कोइकउपायेंकरीअनयमंत्रीयेप्रतिबोध्यो इहांदभागीलुंउरूंपिणजिणनेंदेखवानेवांछुंछुं तोपितानेंकहीनें आर्यदेश
मेंजाउं इमविचारीआर्द्रकुमारराजानेइमबीनवे हेपिताकुंअभयकुमारथीमिलवोवांछुंछुं राजाकहेमतजावोपुत्रइंसर्वथाप्रकारे
वंध्योपितानीआज्ञायेआर्द्रक हिवैउलंघवाछेअभयकुमारस्युंमिलवाकीपिणसोवतांजीमतांचालतांकहेहीसंतोषनपामेआर्द्रक
इमकहेपासेंवाकरोनेकिसोइकछेराजगृहनगरकिणदिसमार्गछेतिहांजावांनो तिवारेआर्द्रकराजायेपिणजाण्योपुत्रनोमन
हिवेकहेराजारखवाकरवानेपांचसेसामंतराखेपुत्रनरखोकी आर्द्रकघोडाफेरवामिसनगरीसुंनीकलीपाछोआवेघडीरच्छलगाइ
नेपहिलीसंकेतकीधोतिहांजिहाजचढीआर्यदेशआवे मेहलमेअभयकुमारआर्द्रकुमारनेमिल्यातिहांप्रतिमापूजाकरतांवैरा
ग्यपाम्योदीक्षालेवे आर्द्रकुमार तिवारेशासनदेवीआवीइमकहे अजिसतांहरेजोगावलीकर्मबाकीछेपडखि मतलेदीक्षाजोग
जोगवि पाछेदीक्षाअंगीकारकरज्यो देवीनीवाणीमानीनहीपोतानेपराक्रमेंकरीदीक्षाअंगीकारकरीपोतेंज आकरोव्रतआर्द
कस्वयंबुद्धपणेपामीपालेशुद्धआचारजमतांश्रीवसंतपुरेआया विहारकरतांबुधिवंतधर्मध्यानमेसावधान बाहिरदेवरानै
कांगेकाउसग्गकरेरहे आर्द्रकसुखसुं इतरेतिणजनगरमेदेवदत्तनेघरेबंधुमतीनोजीवदेवलोकथीचवीपुत्रीश्रीमतीनामेहुइछे
तेपुत्रीअनुक्रमेवधतीमोटीथईपणेरेतनीक्रीडाकरेरमे एकदीनेआर्द्रकसाधुदेहराभेरखोछेतिहांनगरनीबालिकाकेसाथेरमिवा
नैपतिवरवाकीरामतिरमवाश्रीमतीगइ तिहांकाइकथांसार्सुफेरालेइछासुंसारीहीथांजानेवरेतिहांश्रीमतीकहेवरयोमेंसघी ओ
साधजलोवस्योजलोवस्यो इमकहेनगरनीदेवताआकाशवाणीयें देवीरत्ननीवरषाकरेमेहनीपरेगाजे तेगाजनानयथीश्रीमती
मुनिनेपगेलागीसंसारनोसुखकारीउपसर्गजाणी आर्द्रक विहारकीधो मुनिएकठिकाणेनरहे तिवारेतेरत्ननीवर्षानिगरनोराजाले ५
वागयो तेहनेंदेवतायेंवार्योकह्यो जेएधनश्रीमतीनेंवरनेवास्तेदीधोछे श्रीमतीनोपितासर्वधनलेवे हिवेश्रीमतीवरवानेबीजाघ
णामनुष्यआवे पिताश्रीमतीनेकहेनरवारपरणो श्रीमतीकहे वरपरव्योछेमेंसाधुतेहीजमुजनेप्रमाणछे तेहनोमनहेपितानेंजियो

देशपामीसमस्तगुणनाधणीअरिहंतदेवनीपूजाकरे इणलोकनेविषेदुर्लभवनाउत्पन्नासंचयसुंपामीआर्यकुलेपवित्रमनुष्यजन्म
पामीअरिहंतनीपूजाकीजे इमआर्द्रकुमारअनार्यदेशमेंप्रतिमापूजीनेतिस्योतोभव्यजीवजिनपूजाविशेषनाकेकर
ज्यो॥ गुरुनेशिष्यकहेस्वामीजिनप्रतिमापूजीनेअल्पमतीपिणकोइजिनधर्मपाम्योतेऊपरशय्यंभवब्राह्मणनोदृष्टांतकहेछेनगरी
राजगृहीनेविषेशय्यंभवनामाब्राह्मणधर्मकेअरथेजज्ञकरेछे मोटाअज्ञानथीजीवहिंसाकरेछे इतरेप्रभवस्वामीसाधुआपणी
पदवीयोग्यशिष्यआपणागच्छमेनदेखेतदश्रुतज्ञानीइहांविचारेदेखे जाण्योशय्यंभवनेपवित्रपदवीजोग्यगुरां तिवारेयज्ञमेंसाधुदो
यचउरप्रतिबोधदेवानेमेल्या अरेकष्टकरोछोमहा रहस्यनजाणोछो तदेजायइमकहीपाछावलज्योसितावी ब्राह्मणकहेजइस
विनांउरकोइतत्त्वछेइमचिंतवीनेकहे मृषावादीछोजेनीफेरपूछुंछुंगुरांनेजाइ इछेतत्त्वकांइगुरुकहेकरणीनहीयज्ञक्रिया कहोयु
रुवचनजाणतो कोप्योशय्यंभवगुरांप्रतेतदखरगवांनीगुरांऊपरेशय्यंभवकहेकहोतत्वनहीतोछेदसुंमाथोपछगाथी तत्वकहेमा
थोछेदवानोनयसुंगुरुयेश्रीशांतिनाथनीप्रतिमा यज्ञनांथंभनीचेथीदिखावे तेदेखीशय्यंभवप्रतिबोधपाम्यो मिथ्यात्वपरंपरादो
गयो स्वमतछोडीदीक्षालेइजैनेचारित्रअंगशय्यंभव थयोशय्यंभवनेआपकेपाटेप्रभवसूरिश्रीशय्यंभवसूरिविहारकरेइहवीमें दी
क्षालेतांघरेस्त्रीनेगर्भवंतीनेछोडी तिणेमनकनामेपुत्रजण्यो तेपुत्रआठवरसनोथयोसरीबालकामेखेलतो निबोल्योइसोनामकहे
कोथसंसर्गकिस्युं [illegible] कहै तेमनकलाजतोजाइआपकीमानेपूछेतदमाताउपगीथकीगदगदस्वरेरोवतीकहे हेपुत्रताहरोपितायज्ञकर
तोऊंतोजेहवामेंपिणस्येयजतीआयातेणेकोइकसोरूपलेविताथारोमानेगर्भवंतीछोडिनेंगयोगुरांकनेदीक्षालीधी हेपुत्रमंदभागी
नीलुं करुंकांइवीमारोपिताअवार हेपुत्रजतीथांमेसुमनउत्तमुंएपोछेपटणांनगरमेसोपुनिराजछेमातानीआज्ञालेइ पितानेदेखवाने
अनुकंपायेआवइजुमिनोधरयटणानेदरवाजे आचार्यविछेआया तांनेमनककहे शय्यंभवकिहांछे गुरुयेपिणज्ञानदेइजांण्योनि ६
जपुत्र तेहनेंउपासरेल्याइदीक्षादीधी तिवारेतेहनोआउखोछमासनोबाकीजांणीनेंगुरांकनेराख्यो गुरांपुत्रनाहितनेवास्तेचारेअंग

मांहिथीकाढीदशबीकालकग्रंथकाढीनेरच्यो मनकनरणे श्रणआयुकेनी मरी देवताऊथयो आचार्यअश्रुपातकरैरुदनकरे।
गुरानेसाधुकहे हेस्वामी थांजिसागुरुमांनेओमोहरूपी राक्षसप्रसेछे तोकुणरहसी धीरपणे गुरुकहे येआंसतपुड्वो मोहनाइथसुं
नहीं कांइअश्वरिजसरूपनोछे शीतलतापणासंस्नाणज्यो शिष्यकहे स्वामीशुनो अचरिजकांइ गुरुकहे म्हारो पुत्रलेयो इणसाधी दि
हाथोडेही दिनविषे देवताथयो एअचरिजछे शिष्यकहे उम्हारो पुत्रछोतोकयुंम्हांनेजणायोनहीं गुरुबोल्या थांनेजणायां तेहनो आ
त्मानो कार्यसिधनहोतो थेवेयावच करताती उणको आधारनहोतो तिवारे सुधे पालीपांचमहाव्रतअर्य्यमन वघणांजीवानेप्रतिबोधी
मनाइधर्मश्रिआश्रंतकरीदेवलोकेगयो इमजाणीपंडितनजोजिनधर्मसुधनोदेणहारजाणीनेमिथ्यात्वकीबुधिमतकीज्यो कदेइ
इतिचाय्यंनवसूरिकथा॥२॥ ॥एश्रीपर्युषणपर्वआव्यां भगवंतनीवाणीसुणीजेभावसुं अनेजेविनाभावेपिणरोहिणेयचोरज्यूं भ
गवंतनीवाणीसुणीनेतिरस्योतेहनोदृष्टांतकहेछे एजिनवाणीसुंप्यामेघकुमारादिकघणांजीवतिरयातिरेछेतिरसेइसीप्रभुजीनी
छे जेमनमेद्वेषहोयतोपिणश्रीवीरनावचनसुणीनेअंगीकारकरसो रोहिणेयचोरनीपरें धर्मकीप्राप्तहोय तेकथा कहेछे राजग्र
हीनामेनगरीछे सोलक्ष्मीनाघरउत्पमनोहरछे तिहांबेभारनामापर्वतछे तिणपर्वतकीगुफामेलोहखुरोनामचोरचंडाजनीपेरेपा
पिष्टछे तेनगरीनाघरांमेनित्यप्रतेरात्रेंचोरीकरेछे उपद्रवकरेछे धनदेइनेपरस्त्रीयांसोभोगवेछ गाढकरेछे तेहनेरोहिणीनामेस्त्री
तेहनोअंगजातरोहिणेयनामेपुत्रछे तेपिणपितानेंसरिखोछे तिणपुत्रनेपिताएकदामरणनेसमेएकवातकहे हेपुत्र तें म्हारो कह्यो
करिसी पुत्रबोल्यो हे पिताकिस्यारो कह्योसर्वकरिसुं थेकहो पिताकीआज्ञाकरणमेमेसुखछे तदपिताहर्षसुंबोल्यो देवताकीधासमोस (6)
रणमेबैठोसदाइमहावीरधर्मकहेछे तिकोवचनश्रवणमतिसुणज्यो पुत्रकहे तहत इमउपदेशादेइपितामरीसातमीनरकेगयो हिवेपुत्र
पिणपितानीपरें नगरमांचोरीकरे इतरेश्रीमहावीरस्वामीविचरताराजग्रहीआव्यादेवेंसमोसरणकीधोधर्मउपदेशेछे तिहांरोहिणेय
नगरीमेजातोतिणदिशआव्योबीजोमारगनहीं तदविचार्योइणमारगेजासुंतोमहावीरनोवचनसुणवामेआवसी पितानीआज्ञा

तेनजाणुंकांइ तेसाधुनेदेईबीजानेदेसीकांइ इमकहेहीसुणेनहीं एकवारजेहनोकह्योनफिरे सोराजाकहीजे धर्मवानएकवारबोले
सोकरे कन्याएकवारपरणाईजाय एतीनवातएकवारहोयबीजीनहोय तिवारेपिताबोल्यो हेपुत्री नमरानीपरें जमतोपुनीछेतेह
नेहेकिमजणमुझीसेव इमकहे श्रीमतीबोली तिवारे मेहनागाजवानाभयसुंबीहतीऊंसाधुनेंपगीलागी तदसाधुनेंपगेलक्षस
णनोविचारीसर्वीताजवकाथीदीगे तिलेंओलखस्युं सेमकहे इणनगरमे आवेजोसाधुतेहनेंआहारदेईं दानशालायें इम
साधुआंनेपगदेता बारमेवरसें आर्द्रकनेदेख्यो ओलखीनेकहे हर्षेकरि श्रीमतीइसोवचन देहरामे वस्योछोहेस्वामी थेमुजने।
गोफिगयाछा मओलख्योअबारेंपुन्यसुं अवेकठेजासोहेस्वामी देववाणीयादआईजदराजानीआज्ञासुंपरणे इमजिहोंण
एरवे नावीबीजोनथाय श्रीमतीसाथेघणानेगजोगवतांगृहस्थपणेपुत्रऊपो तेपुत्रमोटोथयो आर्द्रकुमारकहेछे हेस्त्री
हिवेतांहरेएपुत्रसहाईछे हुंतोदीक्षालेसुं उंकहेतो तिवारेस्त्रीयेपुत्रनेजणाविवानेताकलेसूतकातवामांड्योनिवकर्मतदपु
त्रपूछ्यो येकांइंसूतकुंकाते तदमाताबोली थारोपितादीक्षालेसीतदबालकमातानेकहे अधीरपणोमतिकरे संवथी।पिताने
बांधीराषसुं बालकपणानावचनकरीने इमकहतोताकलासूंसूतलेइबींटेपगेबापनेहाथमाथेकहेबालकमाताफिरेमती
पितानेबांध्योछे कठेजासी आर्द्रकविचारे एअचरिज एसनेहनोबंधछे इणसुंकांइहोसी हिवेमांहरेपिणकर्मबाकीदीसेछेतोजेत
लासूतनातारमांयेबीझाछे तितरावरसअंघरेरहस्युं तारगिण्या१२ आर्द्रकातदबारवरसंसरस्त्ररलरह्योकसरकरीघरनेंविषे संसारस
सुखभेलवताजीवनेनिजअसरीषायांचमहाव्रततिकेबोम्याम्यपणेपले कोणमोसोअप्रभागियोजगमे पालिलेनवेमनसंवतभांज्यानि
थैतेहथीकपनोधनार्यदेशमेहिवेम्हारीकिसीगतिहोसी अनेपिणदीक्षालेइनेआत्मानेतपस्यासूंप्रमिकरीशोधुंइमविचारी
श्रीमतीनीआज्ञालेईदीक्षालेघरथीनीकलतांआर्द्रकनेराजग्रहीयेजातांविचालेचोरनीटृलिइंआजीविकाकरताआपकार्यवसेमे
श्रीसामंततिकेवलपीनेवांदेफेरसांनेआर्द्रककहताहुवाउमेआदरेसंकीआजीवका पापनोकारणचोरीछेतेहनीचोरकहेछे (7)

मने वंदवानेस्वामी जिणदिनेंतुमेनीकल्या तिणदिनतुमनें देवतावारीकरनैजीवांछा साधुकहै हेजो लांश्रोकांइश्रावस्यो इहलोकपर
लोकनोविनाशक हिवैपिणदीक्षादेनुं सवनीहितकारी सांभंचसैनैप्रतिबोधीदीक्षादेई आर्द्रकमुनिश्रीमहावीरनेंवांदिवाजातां।
गोशालो सांमोमिल्यो तेकहेंछै अहोआर्द्रक एतपतोकष्टमूलछैतेसारो अज्ञानछै इणकारणेनिश्चेइहांकुणअशुभफलछैतेहिसे ए
निश्चेकारणसर्वमानैछै इमगोशालानोवचनसांभलीआर्द्रककहै जोइंगोशाला एकंतनिश्चेमानैछै व्यवहारक्रियानिरफलछैतो
व्यवहारकुंकरेछै वांछितकार्यनीसिद्धिवास्ते तिमनिश्चेवादीबेइंकुंविकालेनहीवेगेरहे आहारादिकनेअर्थेकिंयतनकरेमूरख
वलेपोरसपराक्रमकरेकुं निश्चेवंतनीपरेव्यवहारकुंकरेनिश्चेसंसारनीतोकुंओरहसी तिहांदृष्टांतकहैछै वीजुंसंघीतुकपजेछै गो
बरमेपिणवीछुकपजे निश्चेतोबलवानछैजीणसुं विवहारकीधांनिश्चेहोयछे व्यवहारविनांनिश्चैनहीव्यापारकरैतोलाभहोयसुगतितो
निश्चेआवलोहीजछै तिणदीनआसीपिणसाधश्रावकनेतपजपसंजमपालवाकोव्यवहारकरवो पछैनिश्चैआत्मासोक्षमुक्तिपाम
सी इमगोशालानेआर्द्रकसाधुउत्तरदेवै तदपाछोनदेशकेगोशालोस्तुतिकरेतिहांमिथ्याविद्याधरादिकऊंचेस्वरकरी हिवैआर्द्र
कहस्तिमारकतापसांनेआश्रमेआयातेतापसहाथीनेहणिनेमांसखायछैसदाईइमकहैछै जेधान्यनाजीवमठकडादिकमारयां
कांइहोय एकमोटोहाथीमारयांघणांदिनपाळिजेएकमारतांघणानमारीजे तवधर्ममयीवचनेकरीसांअज्ञानीनैप्रतिबोधेदीक्षादेई
आगेवली[illegible]दिवाजायै तिहांअभयकुमारसहितश्रेणिकराजावांदिवाआवेसो कागुणवर्णनकरे अभयकुमारनेतेसाधु
विनांकारण[illegible]वाउपगारीतुमेअमरजीउमेधर्मनिमाईक्षआअर्हंतीप्रतिमामेलीऊंजातीस्मरणपामीव्हवो अरिहंतनो
धर्मदीवाथीलामकाइकांइनहीथोतुम्हे तिवारेहर्षितथ्याश्रेणिकराजाअभयकुमारादिक आर्द्रकसाधुनेप्रीतमनसुंवांदीनैजा ५
यघरेश्रेणिकबोल्यो नहीतेहिलोहाथीमोपाशछुडावणोगतिसुंवनमे जिनस्तवनाकाचातंतुतिमछैतोपिणडकरछैमोनेघरउचा
दिकसंक्रवा तिवारेआर्द्रकमुनिश्रीमहावीरनेंनमीअनुक्रमेसुथेसमाधेमरीनेआस्वतीमुक्तिपामा। इमविचारीनेंचउरआठोश्राय

नोसंगकुसी बीजोमारराजावानेंनछैविचारीनेमननेंहाथांसुंकानणकीनैजावालागो उतावलोचालतांचोरनैपगेकांटोहदजागोचा
लवासमर्थनहीं नहीकोइबीजोउपायइमहरकरीहाथकांनसुं कांटोकाढतांश्रीवीरनोवचनसुंण्यो तिहांदेवतानालक्षण देवतांआं
खनमींचे फूलनीमालानकुमलावे धरतीसुंअंचाचाले मननेचिंतवैसोकरे एवारवचनसुंणीनैमनमेविचारे मेंघणोसुंण्योपग
संभांचीलीधुकांटो तिमहीकांनणकीलेनेहाथसुंचालैचोरनगरनैमुसे इमकरतांअन्यदासेठनगरकाराजापासेआवीइमकहै
हेस्वामीबतेहिराजामोरीलक्ष्मीविनांभणीनीपरेदेवतांछीजलेवैचोरजाइनीपरेजोरावरीसुंराजाश्रेणिकलोकांनेडरीजांणपांको
टवालनेंकहेजोधणीवाजनेत्रकरीनेअरेतेंचोरनोनाईलीय अथवातुंहीचोरछे लूंटैछैतुरनेतेहीजीणैकारणेचोरनेकुंपकडे
नहीकोटवालबोल्योरोहणीयोचोरनगरनैमुंसेछेनगरकालोकपकडवोरसोपिणदेखवानपामे वांनरनीपरेउछलीनेघरघर
नमैछेकोटफाडिजायछेमागनिकोइनदेखेकोहउलंघे मारवापकडवानेकोइसमर्थनही एकोटवालपणोदरबारमेंराखाईजे तिवारे
राजाअंचानेत्रकरी अभयकुमारनेकहे आपणीसेनांतयारकरीनगरबारेमेल्हो पैसतांनीसरतांचोरनेपकडो रात्रिंदिनमें उलखी
नें राजानीआज्ञायें मंत्रीयेंसेनासाथेकोटवालनेंनगरनेंबाहिरमेल्यो नगरनेंचोफेरघेरोदीधो तदअजाणतोचोरराात्रेंनगरमेंपैसतो
सेनानालोकांपकड्यो बांध्योराजानेंदीधो राजाअभयकुमारनेंकह्यो दंडकांइइणनें अभयकहै हेस्वामीचोरीनोधनदेख्यांविनांदं
डदेवोयोग्यनहीं तिवारेश्रेणिकराजालेचोरनेंकहे तुंकुणछै कहैरहेछै कांइनामछै तुंकिमजीवकाकरेछै कमथीआयो सोकहि
चोरकहै हेमहाराजाहुं दुर्गचंदनामेकुटंबीछुं शीलग्रामेरहुंछुं कार्यनेंसोदानेंनगरमांआव्युंछु अंधेरीविरियांपैसतांरोक्योनाक 8
दाररक्षपजांणपांविनांबांधीआंण्यो हेस्वामीसाचोथेविचारोस हिवेजेचोरनेंबंदीवांनेराख्यो तेहनीखबरपामिवानेंशीलग्रामेराजा
एकमनुष्यमेल्यो चोरपिणवदनेयुधवंतहोवेछैतिणैंशीलग्रामेतेचोरनामित्रवसालोकछै तेहनेंपैहिलीसंकेतकीधोछै एतलेराजा
नोपुरुषतेणेंग्रामेंजइचोरनीवातपूछीतदग्रामकेअधिकारीकह्यो दुर्गचंदकुटंबीवसेछेकिणहीग्रामेगयोछै इसीवातसुंणीनें

तिणेंवरुषवेंरआनेंकहीमदआननेंविवास्यो कांइकइणेकपटकीयोछै तिणसमैअभयकुमारेंएकसातभूमीयोआवासतयारकरायो
सोनारत्नाकरावे देवतानाविमानजिस्यो रतनेकरीजड्यो देवगायननीपरैगायणगावैछै अपसरानीपरे स्त्रियांरूसैकरीछानेंनै
गीतांनेविषेलांबीनोत्यांनीमालाओछैछै साक्षातदेवलोकसरीषाअणटविनोदछै तदअभयकुमारमदिरावंदहासाचोरनेंपाऊअ
मलकीधो आभूषणवस्त्रपहिरावी तलिछायामेंसुवाणे मदिराउतरीतदउठेचोरदेषेतमासोसारो देवसंबंधीलक्ष्मीचमत्कारकारण
विनां पुरुषअस्त्री अभयकुमारनाआदेशथीकिरे मनोहरजयरनंदाइसावचनकाननेसुषनादेणहार उपेंविमानमेंमव्यारूदेवता
थयाछोमोटाऋद्धिवंततुमेंस्वामीछो अमेंजणतुमे थाराचाकरछांसदाई चोरमनमेंविचारे छुंदेवताऊकोंनाई तिवारेंएकजणोकहे हेदेव
पाछेतुम्हेकांईपुन्यपापकीधुं तेकहोअम्हनेपछेनाटककीजीये देवसंबंधीतुम्हनेंदेषाडां तद्दिपिणजोगजोगवो चोरचिंतवे कांईएदे
वतापणोमुफनेंसाचो केअभयकुमारमोनैजाणवानेओप्रपंचकीधो एनिश्चैकिम करविचारूं तिवारेंविचारीनेंश्रीमहावीरनो वचन
कांटोकाढतांमेंसुंण्योथो देवतानोस्वरूप तेहवेसाचोहोसीतोमाचोकहुंसुं झूठोहोसीतोझूठोकहुंसुं इसीबुधिसुंदेषेरोहिणेयो पुरुषस्त्री
नांपगभूमीतलाछबीतलेलागा आंषमीचतीमालाप्रफुल्लितकुमलाईदेषे परसेवोनीजेदीसे इमकपटजांणीनेंरोहिणेयोपुरुषस्त्रियांनेंइ
मकहे दानदीधोजिनपूजाकीधी गुरुनीसेवाकीधी देहरानवाकराव्याऊंचा एहमसर्वलीजनेकीधो इणप्रभावथीमेंपायोविमानदेवगतिनो
इमकह्योथकेतेस्त्रीपुरुषबोल्या तुमेंकांइपापपिणकीधोछैतिकोकहो तेचोरकहेसाधुनीसंगतिरहवाथीमेंतोअकार्यकांइनकीधोफेर
तेस्त्रीपुरुषकहेचोरनैहेदेव एकसुभावसदाईकिइनोनहीरहेछैतेकारणेकोईहैसोपापकीधोहुस्येतेकहो चोरकहेअरेजेपापकरस्येतेहने ८
देवभवनहोयेरेमूर्षकोईशिलायेंचढीनेपुरुषकोईपारावारसमुद्रतिरेकांई तिवारेंजेस्त्रीपुरुषांराजानेंकह्यो अभयकुमारकहे हेस्वामी
एचोरइमउपायेंनजणायें अणजांण्यांविनांचोरकहणोनहीराजनीतिजंधाये इममंत्रीवचनसुंराजायेंरोहणेयनेंछोड्यो चोरछेपि
णकपटेकरीनेपिणगम्योजायछै रोहिणेयोविचारे धिकारमांहरेपितानीआज्ञानेतीर्थंकरराबचनरूपअमृतकारवाईकरीछुंठगाणो।

घणादिनजरत्रण्ये भनसुणीतेतीएतीर्थंकरवाणीछारोकोथधांतेसमयीथरएकवमनतोघणदुःषतसहतो मेंतोबाबाविनापिणतीर्थंकरनावच
नसुंणवाथीकेवचनमांमेंजीवताछुंतेनीसंभूतदेवायारेंसुंणीयेंमपगुरुषपांवुनिश्चे इमविचारीचोरगयोश्रीवीरजिननेंपासेजइनेंनमी
नेभक्तितीइमकहे हेस्वामीअंधकारनासप्रेषेकरीआपनेंअंजनसमानआंषनीवाणीछैमारीसकरूणाकरेछै जिमसूर्यनीकांतिअंधकारनोनाश
करैछेतिम मांहरेविमाइरत्नभ्रमणनाथनावारिहिनामभवसीनानीकारबाहुइतियेमीमांस्यो केरवोरीकरतीनीसाइ जिवारेंयारगेंजातां
गणयांमेंतेभारोवचनसुंण्योथोहैमाथ तिणथीहैकरीलेराजामत्सरसिपयीछुंजीवतोरह्योमींमांमनरतारायो हिवेपिणमैंसंसारनाव
पथीरायो हेप्रभुधांणरीरूपमांमुक्तिमंदिरकीरेवावालीजनलीयमकीदेशनाद्योमीणीतापीनी चोरप्रभुउपदेशसीधो प्रतिबोधपांमीरो
हिणेयचोरनमीकहे हेस्वामीदीक्षालेवानोमनछै आजमारारहदमनोरथछै पिणकांइकपथिकराजानेकहणोछै इसोप्रभुनेंकहीनेजाइरा
जानेकहैछै हेमहाराजारोहणेयोचोरछुंहुं थांरानगरकोचोर वीरप्रभुनावचनसुणीप्रतिबोधपाम्योछुंदीक्षालेसुं तिणेनेलेथांरोआपनोदी
[illegible] पाछुंधनतिवारेंराजाजीआज्ञाथीअभयकुमारनगरकालोकसहितरोहिणेयानेंघरेजाइनेंलोकांनेधनदेवैचतयोलीधोधनदेईजतंव
नेप्रतिबोधीश्रीवीरकनेंगयोऊदेवसुकराजाकीयोदीक्षानोउत्सवदीक्षालेइनैघोरतपकरैघाकरा कर्मक्षयकरै छेहडेअणसणकरीआ
आहारत्यागीअणसणेमरीनेंरोहिणेयऋषिराजदेवलोकेंगयो इमजिनेश्वरनावचनरूपअमृतपीवासुंअनंतसुखनोकारणजीतसोऊओ
रोहिणेयजिम तिमओरपिणजपजीवतेहनीपरेंएतीर्थंकरनावचनअमृतपीवामेंतयारहोवो जंअजरअमरमोक्षपामो इतिरोहिलेय
कथा॥ हिवेभावनाऊपरेनरतचक्रवर्तिनीकथालिखियेछै तिणेकालेचोथाआरानेविषेऋषभजिनस्वामीविनजेहनोएहवीपृथ्वीनोराजपा
लैछैनरतक्षेत्रनाषटखंडनोभलीभरतइसैनामैराजा एकदाहर्षसुंस्नानकरीगोरवर्णअंगेगहणापहरया आरीसाभुवनमेंपैसेसरीरनैप्रमा 9
णेसुराभाणेचढाव्याइसोआरीसामेंभरतरूपदेषेआपकोश्रीउरकातेजपणासुं देषेआंगुलीएकमुद्रडी एकवेटीआंगुलीविनामुंदडीदिषे
हिमपवीदाथीशून्यनीमापानीपरैमनमेंचिंतवे जिमएआंगुलीविनानाकारमींडेकरीछेहडै जिममुंदडीयेंजाणवो तिमहरपिणसंसार

मेशरीरनाभूषणकारिमोछे माथेसुमुकटहरिकरे कांनदेनांसुकुंडलहरकरे कंठसंहारहरकरे हाथसंकडाहरकरे आंगुल्यांसुंमुंद्रडा
हरकरे कंकणबहरखाहरकरे वीरवल्लयमोतीहरकरे नारजाळीनेजतारेहीयाबाहार वैरागपनेगजतोऊवो कायागनेफुलंफलपत्र
विनांजिमदरक्ष्यदीसे तिमगेहणाविनांसरीरदेषीनरतमनमेविचारे कायांनीतकीपरेचित्रामचित्रिकीजिसीशोभेछे सोजलसुंमिल्या
नीपरेचित्रामविरूपदीसे तिमएशरीरकुरूपदीसेगेहणाविनां तोएआश्चर्यछे जीवनेमोहनीकर्मसरीरमेरच्योछुं विछूटेछे रोगरूपी
पवनवाल्यांवृक्षनापानपडे तिमशरीररोगसंपडे चामडीदेहनेंसारछे अरशरीरनेंरातदिनजतनकरेछे चंदनादिकनोपिणऔषधनछो
छेछे जिकेकरेछेशरीरनेनिमिसेलोकपापउत्कर्मअरतितिकोसरीरकमलनापानविषेरह्योथकोपाणीनोबिंदुसीकीनांईचंचलछे
संसाररूपतोषालवहैछे दुर्गंधसिणगाररूप रसनामपाणीछे इणनेजांणनाप्रीतनाकरेछे इष्टांतकरु जिमसदुरूपतोपाकमेपडे सपह
जारखरस्वतांईनमीनमीष्टथवीमेशरीरनीसोभावंतलेवे सोमुकनेधिकारहोवो धन्यबाहुबलिनांई धन्यऔरसर्वनांईजेशरीरछोडीने
संसारनीमुक्तिपाम्याछे राज्यचपलछे योवनचपलछे लक्ष्मीचपलछै जगेथिरताकांईछे माता पिता स्त्रीनांईपुत्रधनजीवनेसंसाररू
पकुवामेपडतानेनहीकोईसमर्थराषवाने पितांई जगतनेराषंनाउरनिपालवैछै जनेराष्या पिताकनेरहवोतोकदेछे पिणमोनेदुखपुत्र
नेयादकीयोनहीनहींकिणकोनकोईम्हारो नहीम्हारीलक्ष्मी नहीम्हारोदेह नहीम्हारोघर नहीम्हारोनगर एकसमतानंदअमृतरसस
मुद्रमेकरुंसनाम संसारकाडपसंरहितहोउं क्रियाकरीअनुक्रमपामुंज्ञानविदानंदजीवपामे शीतलपणोधर्मसुं रौद्रध्यानथीफल
थीपरजोहथीदुष्टकर्मथीउपार्ज्योमोटोपापकोजाथनायेकरावांतिहोयदेहरूपमुंसामेरह्यो ध्यानरूपअगनिकरीबिरकरुंबांधकबांधे
जिमजेभीपाशनेतिमनरतेश्वरमुक्तिवासेमननेबांधे क्षपकश्रेणीचढीमेउपशममनवचनकायाकरीनेसजोगीतेरमेगुणठाणेचढीनेके ८
वलज्ञानपामेशुक्लध्यानसुं इंद्रनीआज्ञायेंदेवताउघोषीदूपतीदेवइं सर्वविरतिकरेकरेमिनेतेसामाइयंपढे राजादशहजारदीक्षालेनेनर
तरूषीपाछे तिसाहीस्वामीकीसेवाउणनवेछे अरोपिणसुषकारीहोसीसुरसुरगनरनजिसुंवांदेसांसाथेभवलांनेवांदेवांदेओरसाधा

ने अवधिज्ञानीमनपर्यवज्ञानीनेंवांदे हिवेजगतकाजानेसहवासेसमरथएहबेभरतनोपुत्रसूर्ययशानामेतेहनेइंद्रराज्याभिषेककरे ।
तेभरतराजऋषीकेवलज्ञानपामीनेऋषभस्वामीनीपरेगांमआगरनगरेविचरताघणाभव्यजीवेप्रतिबोधीघणेसाधुपरिवारेसहितएक
लाखपूर्वविचरतांईविचरीने अष्टापदपर्वतजईच्यारआहारनोपरित्यागकरेयथाविधिएकमासनोअणशणकरीश्रवणनक्षत्रेचंद्रमा
आयांथकांमोक्षगयामुक्तिंपुहुता अनुक्रमेउरविणसाधुसर्वऋषभदेवनीपरेऋषभपुत्रनोपिणइंद्रादिकदेवतानिर्वाणमहोत्सवकरेदेह
राकरावेऊंचाबारेंधनुषना नरतससतंतर७७लाखपूर्वकुमरपणेरह्या एकहजारवरसमंडलीकपणेरह्या एकहजारवरसऊण
छलाखपूर्वलगंईचक्रवर्तिपदभोगवे एकलाखपूर्वकेवलीपणेरह्या इमचोरासीलाखपूर्वसर्वआऊषोपाळीनेमुक्तिपाम्या अष्टाप
दनीयात्राकरेतेआठकर्मनेंनेदे अष्टसिद्धिमंतऊवे पछेमुक्तिंजाय संसारीलोकजलीनावनाभावतांआठप्रकारेंपूजतांआठप्रातिहा
र्यसहितकरतांअष्टापदनोगमदेवेजिनेश्वरअष्टापदइसोअक्षरबोजतांविकश्वरपुष्पसुंपूजाकरेअष्टापदनीयात्राकरेतोउतकृष्ट
सागरांकाकष्टपापसुंछूटेनिराकारपदपामे यात्राअष्टापदकीजोकरेभुनन्नावथीतेतीजेनवेमुक्तिपामेनिश्चे एअष्टापदमोटोतीर्थछे
अरिहंतनामंदिरनीउपमाछे पवित्रकरेछेतीनभुवननेउत्पनीमाशिनीपरेउज्जलछे हिवेसूर्ययशराजाकसुंऊषभऊवोतद अष्टापदमे
देहरानीश्रेणिऊंची अनुक्रमेंसुषनोप्रतिबोधदेवे मंत्रीमुख्यतिकोराजकार्यकरे भुजाईकरीसूर्ययशातेजेकरीजीताछेशत्रु चंद्र
मानीपरेउजलयशप्रकाशकीधोछे राजातीनखंडनोस्वामी षटखंडनाधणीतोपुत्र अर्धभआज्ञापलावेछे न्यायनीतिनोजाणछे जिम
देषुंसूर्यचंद्रमाकोतेजआकाशमेंदीपेछे पिणएकलासूर्ययशानोयश पृथ्वीमेदीपेछे धारेछेमुकटइंद्रनोदीधोतिणेमुकटनीमहिमा
थीसूर्ययशाराजानीदेवतासेवाकरेछे तेराजानेविद्याधरनीपुत्रीसर्वस्त्रियांमेरत्नसमानजयश्रीनामेस्त्रीअरबत्तीसहजारसर्वस्त्रि
यांपवित्रछे च्यारपर्वतिअष्टमीदोयचउदशीयेंविशेषपच्चषाणपोसोउपवासकरेतपस्याकरे जीवनीपरेच्यारपर्वनोआदरराजा
नेवालोछे नावेकरीपर्वनीक्रियाकरे एहवोनियममेंदृढरहेछे हिवेएकदाईंद्रमहाराजासुधर्मासभामेबेठोराजानोनिश्चोदेषीअवधि

आनथी चमत्कार पाम्यो माथो हलावतो ऊर्वशी अपछरा जगतने वश करवा पेहलीऊं मथले ते इंद्रनो मस्तक कांपतो देषी इंद्रने कह्यो
हे स्वामी कविनवो काव्य न करे छे को इ युक्ति अवासं भरी छे मनोहर पद पिण अवासं टहस्पति न करे छे रसनो कोसंजोग पिण न छे नायिका
पिण न छे गंधर्व पिण न गावे छे आर पिण एर्क को उछाह न छे तो किण कारण हे स्वामी धुणायो थ्हे मस्तक तद कहे इंद्र सुणिहे उरवशी अ
बारु ज्ञान म्हरो छेछ्यो मैं छे श्रीकृषनस्वामीनो पोतरो नरतचक्रवर्ती तो बेटो अयोध्याये सूर्ययशा राजा सलवंत मे शिरोमणी छे तिको
आवमचोदश पर्वे उपवास करे पोसो करे छे नवले धर्मथी कोइ इंद्रादिकने यतने करी पिण अर्वदिस मेरुथी सूर्य पश्चिम उगे मेरु पर्व
त वायरे कंपे समुद्र मर्यादा छोडे कल्पवृक्ष निरफल होवे तो पिण ओ राजा चलाइ न सकीये आणजा यतो पिण जिन आज्ञा न छोडे उरवशी इ
म सुणीने मनमे कांइक उत्तर देवाने असमर्थ थकी इम चिंतवे हे स्वामी उम्हे कीसुं वषाणो देवतां का स्वामी होइने अज्ञानीनी परे अयुगत
माणस मे इम निश्चो मानो छो जे सात धातमे ऊपजे आर अन्नसुं जीवे ते हने देवता नही चलाय शके इम कहो छो ए न संभवे निश्चे कांमरागा
कानार से करी रे तना कण अचेतन ति केन चलाय तो मनुष्य गुणकां इ इंद्र न होय म्हारा गीत सुंणमा इंद्रनो वचन ऊंगो करी राजानो निश्चे
भ्रष्ट करसुं व्रतरूप पर्वतने गालसुं जिम नदी पर्वतने गाले तिम इम प्रतिज्ञा विचारीने रंभा सहित उर्वशी वीणा हाथे लेई देवलोकथी
ऊतरे अयोध्याने नजीक वनमे देहरे श्रीऋषभदेवने मोहनी रूप धरीने गीत गावती ऊर्ध्व इंद्रनी साषाये वैगार्पथी पिण बिलमे आत्मा
ने नही जाणता ऊवा मूर्छावंत हुआ गोऊ सर्पनी ल्पा देषी ते हने छोडी आपणा शिका[illegible] चित्राम [illegible] सनालिखानी परे निश्चल पणे रह्या
आधो चाव्योत्रो घास फुरकावे नही छे नेत्र इसा मृग चर्म्या पाषाणना जे हुवा निश्चल पणे रह्या मोरा इतरे सूर्ययशा राजा घोडानी फौ
डा करीने पाछो आवतां सुण्या गीतना शब्द घोडा चाली सके नही गज चाल सके नही पाला चाल सके नही इम सेनानो कल्पित निर्बल
देषीने राजा कहे आदरसुं मंत्रीने अथवाणी हे मंत्री मोहरूप समुद्रनो पाणीनी बेलनी परे वरजे छे नही समर्थ वाल वासेना नालोक अचेत
न होय रह्या छे बालक अस्त्री नागां न थी बिजवासी पंषी मृग हाथी सुर कोइ रह्या छे गानकार सघ की इहां पिण हाले न छे गावे छे नही १०

सुरकावे जे अनंत सुषनो थली कांइ ते हने ओपमा दीजे पशु पिण गावांसुं वश होय छे गाइवो घणे सुषको आधार छे नाद ले हु षनो समूह हू
रकरे गाइवो जिको जांणे छे तिके जगतमे श्जनीक छे जीवतव्यने छोडता पिण मृग रागने सुं ले छे अमृतनो समूह एहवे चंद्रमाये पिण जे मृगने
पोताना विमाने ब्याप्यो छे गाइवासुं देवता तुठे धर्म गाइवाथी ऊपजे गावणाथी राजा धन द्ये गावणेथी स्त्री वश होवे नादे करी देवांगना
वरे नादे करी सुरता वधे गावो परम आनंद सुषाने देवे थोडी वेलामे तो नमस्कार करां देहरामे श्रीऋषभदेवने पिण नमस्यां तवे गावा
नो दान लाभस्यां आपे इम विचारी राजा मंत्रीष्वर सेना साथे जाय देहरामे तीका गावा कामो हसुं तितरे देदीप्यमान तेजवंत गाइवा रूप
अमृतकी नदी तुल्य देषे राजा वीणा हाथमे छे कुमारी छे कांमदेवनी स्त्री रति तिते हने तुल्य देषी ते दोन्युं राजा प्रतै स्नेहदृष्टिये कामबाणसुं
बींधे राजा इम चींतवे कांइ ए दोन्यामे गलाने ऊंम अमृतरस सुगायवोनी कले छे ए दोनुं विधाताये आवासुं रची छे रूप एहनो निरूपम छे गान अ
मृत जिसो छे ए दोनुं किण ऊरूषने भोग काजे ऊपी इम देषी राजा पिण सांदोनां विषे नेत्र चलावे नमस्कार करे श्रीऋषभ जिणंदने पाछो आवी
देहरा कांहिसुं राजा वैगागो षाने बारणे मंत्रीने कहे ते दोनुं नाऊ लजोंणवाने मंत्री पिण राजाना आदेशथी पाछो देहरे आवीने मीठा वचने करी
ते बेऊंने कहे तो ऊवा थे कोण छो तीन लोकमे ऊंण नरतार छे थांके किण आया छो इहां करे धारी वात थे दोनुं इम कहे ते दोनुमे एक बोली म्हे
विद्याधरांको स्वामी मणिचूड राजा ते हनी पुत्री छां बालपणां सूं कला सीषी छां म्हारो मन कलामे लागो छे निम षेलुं छु वीणासुं रमुं छु उत्तक वा
चुं छु इम करतां म्हां दोनांके देहमे जोवन प्रगट्यो मातापिताने चिंता ऊपनी नही म्हारे सरीषो भरतार लाधो जगतमे तद पितानी चिंता मेटवाने
तिको ले श्री अरिहंत मा देहरा समतां आपणो जन्म सफल करसी हे मंत्री फिरां छां वले मनुष्य जनम कौन्हे या अयोध्या तीर्थ न तबे जिनेश्वर
ना पगांथी पवित्र छे इण कारण नरतने देहरे नमां छां प्रथम जिनने भेटिन्युं इम कहे छे थके मंत्री पाछो कहे श्री सूर्ययशा राजाने साथे थांको मि
लाप करस्यां श्रीऋषभदेवनो पोतरो नरत चक्रीनो पुत्र कलानो समूह सहित सोलाग्पन जो गुणवंत बलवंत छे एहवो भरतार अवे लो
ऋषभस्वामी दीक्षा थांने तत्काल जगे जिम चंद्रमा कांति किरण निम निरशि त्रिंगोने तिम थांमे श्री सूर्ययशा साथे शोभस्यो इम कहे थके मंत्रीये 11

तेतेकंबोली स्वाधीनतरतारसेंकीवीजोभरतारनहीपरणं मंत्रीकहे जेअम्हारो वचनधायामोवरछोछे में राजाने इमकहीराजानेमनाइ
मेवातस्वाधीनपतिपणंकीस्त्रीकीआज्ञालोपसीनहीतेस्वाधीनपतिकहीजे मनाईमंत्रीतिवारे तहांश्रीऋषभदेवनीसाषेंवीवाहकीओ संको
उच्छाहसर्वप्रकारेप्रीतिकोबंधन तेदोकंप्रीतिरससंबंधेओराजावेषाएंकरीसंसारमेसारविचारे कामभोगसुखस्त्रियांनोसंसारमेसारछे धर्म
अर्थकाममोक्षा एककामसेवाकरेराजा पुरुषार्थरूपरथ एकपाथेंकरीचालवेराजा ओरदिनेंसंभ्रमसमे स्त्रियांसहितसूर्ययशाराजा
मेछलनेकरोपेछे तो तिणसमेनगरमेपडहोफिरेछे नोलोकांप्रतातेंअष्टमीपर्वहीसेआदरवंतहोज्यो तेवास्ते पडहोवाजेछे तेसुणीकप
टणीस्त्रियांजाणतीअजाणहोयमेपडहनोकारणछै आदरसुं राजाकहेसुणोस्त्रियो एमोटोउत्तमछेचउदसआठमनोपर्व पितानेरतेकह्यो
छेसंसारनासुखनोकारण दोयअठाइपर्वनीकवाआसोजनीचोमासोआसाढीतीजोछेपजूषणिनीअठाइकीयांवधनीपापजायज्ञाननि
क्षेपहिलोरत्नछेतीनरत्नज्ञानदर्शनचारित्रछेतेह आराधवानेहेस्त्रियोपंचमीदिनकह्योछे पर्वदिनएननापुण्यनाकारणजिननीआज्ञाछेमो
टपनावीक अनेकप्रकारनापवित्रछैहेसुनसुवी सपाईकीधीपुण्य मुक्तिनासुषनादेणहारछे सावेआठमपर्वनातपनोफलनरहोयतोसु
नआमश्रवकर्मनेजीवुसंचेछे हेप्यारी पिणआरपर्वनाआराधवाथी नरकनापापदूरकरे तेवासे एम्यारेपर्वदिनेछोडजिसंसाररूपदुःखनाबीज
नीपरेघरकासर्वआपार धर्मध्यानकरीजे आरपर्वदिनेंस्नाननकीजे स्त्रीनसेवीजे लेकग्रनकीजे आरंनपरायोहसनकीजे मत्सरपणो
क्रोधनकीजे मानमायालोभनकीजे ममतास्त्रीकीनकीजे आपणीइच्छायेनबेलीजे पचमादनसेवीजे धर्मकीरुचिकीजे गुरुषेयलपणे
मलोध्यानकरणो पंचपदनोकारगुणवो सामाइयोसोतपस्याकरणीजिनइजा नियमपालणा गुरांकापगपासेरहीपरमेष्ठीस्तुतिक ११
रतांलोकउपार्जेपुण्य षवावे आंवहीकमतेरसअनेसप्तमीदिनेलोकनेंजाणवानेहेस्त्रीयो निक्षेपटहकोवाइ म्हारेआगाथीहोयछे
चोदसआठमपर्वतीनलोकमेदुर्लभछे पामवाहेदेवीयां दिनांमेंकरेअनूनीनक्तितो जायप्राणीमुक्तिमें सुणीउर्वशीतिमतकारपामती
कहेकपटवचन किमहेस्वामीमनुष्यपणोंरूपराजसारोउम्हेनिरफलगमोछो तपसोसानाकेज्योंकरी यथेच्छाभोगवोसुषकहेछेपुनः

मनुषजन्मकहेराज्यकहेंनलाभोगजिसंरूपराज्यअर्थदसुषभोगवो एहवो वचनसुणीराजात्यांको नपायाकथीरजिसोउत्तसुणीअंतर
दाहऊपनो तरफेरराजाकहेछे रेवामेनीचछोधर्मकीनिंदामुंमेलीछेथांकीवाणी विद्याधरांकाकुलमेयोग्यनहीधर्मनीनिंदाकरवीधिका
रछेथांरमिथुराईसांरीनें धिकारहोरूपनेकुचालनेवयनेनहीजिणकेजिनइजादितपस्याधर्मकार्यनोअंगीकारपणो मनुष्यपणो रू
पनीरोगता राज्यतपसुंपामीजेछे आराधेनहीतिकोऊणनिश्चेकीधागुणनोजाणकुलमंदन धर्मआराधवाथीनहोवेदेहनेनिश्चेदु
षकदेई धर्मविनांदेहनें केवलसंसारदुषजाणवो पोतानीइच्छायेधर्मकीजे फेरकहेमानवभव कहेराज्यकहेंनलाभोग पछेपछिता
वोहोयछे आठमचोदस मृगसिंहसर्पहिंसकजीवपिणआहारनलेछे तोइं किमलेऊं हेस्त्री धिकारछेत्यांकीजातिनें मनुष्यपणोत्यां
कोनिरफलछे नहीपर्वकोआराधनजहे सर्वधर्मनोमूलनहीं श्रीऋषभजिनेश्वरे कह्यापर्वदीनुंउत्तमविनांतपस्यानिरफलकरेप्राण
गयांपछेजीवतांतोनहीभांगसुं चलेजावोम्हारोराज्य मलोम्हारोमरणहोवो पिणपर्वनीतपस्यासुंभ्रष्टहूंनहोसुं हेस्त्रियो इमक्रोधसुंउ
वीराजाना वचनसुंणीऊर्वशीतिवारेमोहनीमायाकरीनें फेरवचनकहतीऊई हेस्वामीमईस्नेहरूपरसनींदमे योवचनकह्यो मतकरोऊ
रीरनेंक्लेश अबारुं क्रोधनोअवसरनछे म्हेदोसुंपितानोवचनसुंकबूलीऊई आगेपिणइसास्वचं द्वारीराजावस्यानहीवस्यातोभवनोउ
परजवो स्त्रीनाकर्मकापरिपाकसुंअबारुंतोनैवस्योतो संसारनासुखशीलधर्मसाराएकसमेहीगया स्वाधीनपणेपुरुषस्त्रीनोजोगजेपा
मीजेतोकांमभोगभोगवणाअनेंस्वाधीनपणांविनांरातेसंजोगदिनेंविजोगइमभोगदुःखरूपजांणवा हेस्वामीअम्हेऋषभजिनआगेपहिलीहीम्हे
कोवचनमांनणोअंगीकारकरयोछोनिश्चेएकवारथांकीपरिक्षादेखवानेअम्हेकह्योछोउपवासमतीकरो इणथोडाकामवासते इतरोक्रोध
कीओषेदकरी उठऊइछांम देनुंवातथीकीसुंसुषसुं तिसेबोनेमरणेआछोछे चिंतारूपअग्निसेचनाथी इमस्त्रियांनोवचनसुंणीराजाते 12
हांमनछेचित्तजेहनो समरेछेपोतांनोवचनकहेप्रगटवाणी जोकह्योतदेरूपभजेकह्योपिताआरतेंतेहनेोपुत्रकहुंकहुं किमपर्वनोनाश हेह
रिणाक्षीसुवर्णलेहेमानवतीदृष्टिपिणीलेहेगजगामिनीहाथीलेहेअष्टमुषीघोडालेहेस्वर्णांनीभंडारलेआसारो हेष्टहणीघरलेसारो नहीं।

छे सुध जिमधर्म विनां तीसंपतकराय धर्मलोप थाइसी इसीनें करवसी कहे कोमलवाणीसुं उम्हे जे हवा राजानो साचो वचन निश्चे व्रतनवो
छे पोतेअंगीकारकरीघातकरे जिको पापात्मा तिसुं अपवित्र छे ष्टथ्वी तेहना भारसुं वचनहारेजिणासुं उक्तंच नचमे पर्वताभारा नमेभा
रा च सागराः कृतघ्नश्च महाभाराः भारा विश्वासघातकाः १ ईणाश्यतोसुं एक धर्मको वचन नहीं सिद्ध हुओतो किम राज्यदेवानो कामसी
धसी ष्टथ्वीमे पितानी विद्याधरनी ठकराई थी रे वासते छोडीठी राज्यादिकनें जिको कांईकी जे मोने चतुर पुरुष जोई पर्वनो भंगन करै छे तो हे
राजा श्रीऋषभदेवनो देहरो म्हांदेषतां पाडो इमसुंणीनें मात्र राजा मूर्छा पामी ष्टथ्वीमे पड्यो अचेत हुई नें नजुसंह एणानीपरे तिवारें मंत्रीनी
आज्ञाथी इणहि परिवारना लोकें तिणे चंदन लगावी वीज णे वायु करी सचेत न हुवो राजा हिवे चेतन पणे लालमुषे आगे रही दोषवंतनी
परे देषीतां स्त्रियांने आकरा वचन कहे हे निश्चयो थांरे आचार बाणी कहो छोमो आगे उम्हारा कुलनो नीचपणो जणायो जिम हुकारथी जो
उन जाणीजे तिम नही थे विद्याधरनी पुत्री को इक चंडालकुल थी छो मईमलिनई आते कांचनाइ कुडाने आदरयो छे तीनलोकना नाथ।
योदेवता तीनलोक जिणनें वांदे तेहना कलापव किमभंग कीजे अनें देहरा भंग किम हुवे इसी तेवचन सुणीधनो सो रिग्ण रहित करोनोनें ध
र्मनो नाश करो मती उरकोई चाहे सो मांगो देस राज घोडा हाथी रत्नादिक सर्व जीवो मंहारा देसी प्राणनाश होय तो पिण पर्वदिनको लोपक
रूं नहीं कहे छे तन्नी हे राजा सुणि हसिनें कहे तो हुई हे स्वामीपर्वनो भंग मतकरो पिण वचन तो राष्यो ओ अंगीकार न करो तो इमकरो थां
का पुत्रनो माथो छेदिनें मोनें देंणोछो अबे विचारी राजा पाछो कहे हे सुलोचनें मोसं हुवो छे पुत्रतो म्हारो माथो थांनें देसूं इम कहीनें राजा
जिसरे हाथसु लेईस्यो विनां षडग आपको माथो छेदे तिको आरंभ करे तितरे षडगकी धार रहै वांधे अवसी फिरती राजाको सत्वने सर्वथा उदय
करे विलषो हुउं राजा षडगनी धारा बांधवी थी नवा नवा षडग राजा जिवे लेई कंठ काटै जणि इं कोसलन चल्यो राजा को तद पामी आपको रू
पप्रगट करी जय २ शब्द कहे आदरथी जयवंता हो ऋषभदेवना कुलरूप समुद्रमे चंद्रमा उत्पन्न जयवंता हो धीर्य वित तमे मुख्य जयवंता हो च
क्रवर्तिनापुत्र आश्चर्यकारी सत्व छे आश्चर्यकारी धैर्यवंत छो अचरिजकारी निश्चय छे ते थारो मरण लीधो पिण न छोड्यो आपको व्रत लिंगा १२

रमाज देवलोकनी सभामे इंद्र महाराजा देवतां आगलें उम्हारा धैर्यनी महिमा घणी प्रशंसी विशेषपणे अनें दोकुं जण्यां हे राजा नदीनीपरे
पिण मेरुपर्वत नदीने ड्रेरेन चले तिमतेनें चलावानें अतसुं अम्हे आरंभ्यो परं उहंत चल्यो हे शाक्तिकरी समुद्रनी वेलारोको पवनवाजतांने
राषो मेरुपर्वतनें चलावो तो पिण धर्माधीरजनें नरतापशकी अनुनाकुलमे ईहीरास मानछे ष्टथ्वीमे सूरवीर छे धरतीमे रत्नभूतथारो
नाम छे अमृतसरीषो थारो प्रताप छे ते दोनुं राजाकी स्तुति करे छे देवपति इंद्र आयो फूलांनी वर्षा करे उत्साहथी जय जय शब्द करे
प्रतिज्ञा व्रष्टभई उर्वशी तिणसुं हासा सहित देषे ते राजाना गुण इंद्र आगे कहे विकस्वर मुषे करी इंद्र पिण ते राजाना मुकुट कड़ा देई हार देई
नमस्कार करी देवलोके जाय देवी सहित अन्याय रूप अंधकारनें दूर करै छे शत्रुरूप तारांको विदारण हार छे सत्य प्रतिज्ञा छे ष्टथ्वीनें इसो को
ई ष्टथ्वीनो रक्षक बीजो नहीं जरतनीपरे सूर्ययशा राजा ष्टथ्वीमे देहरा करावे जिनमंडप करावे संघकाढी पंचतीर्थ यात्रा करे आपकोजनम
पवित्र करै चो दश आवे सुषकारी नवा धर्मवंत सदा आराधे श्री ऋषभदेवना चरणांने ज्ञान दर्शन चारित्रना धरणहार श्रावकांनें राजाउल
बी साहमी पणे भोजन करावे आपरै घरे कांगणी रत्नें करी रेषा करे तिक की थाछे भरत राजा सो नाकी जिने ऊको तिक करद्वे राजा
सूर्ययशा महायश आदि देई कोइ रूपानी जनेऊ केइ करे समीस्स नी श्रोर सूत्रदिवे निश्चे उदार छै चरित्र जांका ऊमार तेजे करी पराक्रम
वंत छे एहवा सर्वना लाषपुत्र छे इक्ष्वाकुवंश श्रीऋषभदेवजी सुं हुवो तिमसूर्ययशा सुं सूर्यवंश हुवो ष्टथ्वीमे एक समे भरतनीपरे देषे रत
नना आरीसामे राजा सूर्ययशा आपणो शरीर गेहणा बिना अशोभनीक तेदेषी संसारनी अनित्य भावणीने केवलज्ञान पामे विहार करीनें
प्रतिबोध देवै सूर्ययश साधुभ मजीवांने अनुक्रमै मुक्तिमार्गे जाय जीताकर्मस्पिरीग भरतके पाछे आदित्ययशा १ महायशा २ अति
बल ३ महाबल ४ बलवीर्य ५ कीर्तिवीर्य ६ जलवीर्य ७ दंडवीर्य ८ इम आठ पाटतांई विरचे स्वामीको ह्रजन ए आठ राजा पोतानो रूप आरी
सामे देषतां केवलज्ञान पाम्यो अनुक्रमे मुक्तिं गया यां आगे ही भरत षेत्रना तीन षंडनो राज्य भोगव्यो इंद्रे मुकट दीधो तिको माथे मेलवा
थी मुक्तिं गया बाकी राजा मोटा होसी गुणसुं मुकट ने बोझ जाणी उपाड वा पार पाया नहीं जिम हाथीनो भार हाथी ही उपाडे बीजो उपाडवा 13

समरथनहीतिमजरतनाइन्नजरतनावंशमैउत्पनाशिकैअजितनाथस्वतीर्थंकरतांईपंचानुत्तरगयाकैमुक्तिंगयासारहीसंघ
वीजआसारांहीदेहराकरायासारांतीर्थउद्धारकरायासाराअभंगपरवापीजआश्रीभगवाननाथर्मथीजोनचलेजिमारमाञ
सोपांमेमोटीऋद्धिराजासूर्ययशानीपरेइणवंशमेतीनभुवननाभूषणश्रीरिषभदेवनेकोडिशाखायेकरीउदयवंतयशानाथणी
निरमलचारित्रनाधणीभुत्रयांकोमुक्तिमैविवासछेतीनलोकनाजीवनैसुषउपजावोछेलकडीआंधांनेतिमवछभछेअबा
जक्षमीकाभोगवणहारआनंदनाकरणहारधर्ममैरूपनत्रुष्प॥इतिअष्टाह्निकामहोत्सवसंपूर्णम्॥

१३